Living the LOTUS
Buddhism in Everyday Life
10
2018
VOL. 157

Founder's Essay

सहायता के लिए रोने की पहचान

कोई भी माता पिता विचलित होगा, यदि उनका बच्चा उनसे कहता है, "माँ, मुझे आशा है कि तुम मर जाओगी!" हालाँकि, यह वास्तव में एक व्यथित बच्चे का माता-पिता से मदद के लिए रोना है। हमारे बच्चों के शब्दों और दिल में हमेशा ताल मेल नहीं होता है।

जब आप शब्दों पर फट पड़ते और कहते हैं, "मैंने पैदा होने तो नहीं कहा था!", तो आप अभी भी एक रूकी माता-पिता हैं। माता-पिता का प्यार इस पर विचार करने के लिए है कि आपके बच्चे को क्या लगता है जब वे आपसे वैसी कठोर बातें करते हैं। यदि आपके पास कोई रास्ता नहीं है, तो आप उसके कठोर शब्दों के जाल में फंस जाएँगे, अपना आपा खो देंगे और निराशा में अपना हाथ उठा लेंगे। "ऐसा कुछ हमारे बच्चे के मुँह से क्यों निकला?" आप स्वयं से पूछें। संसार के त्रास की ध्वनि सुन लेनेवाले बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर का "सही सम्मान" वही है, जो कुछ आप अपने बच्चे के दिल की गहराई में पैठकर देख सकते हैं।

एक वेतनभोगी के परिदृश्य का सामान्य चित्र है कि वे अपनी कंपनी की शिकायत करते और काम से घर जाने के दौरान रास्ते में थोड़ा खाते पीते अपने वरिष्ठों को नीचा कर दिखाते हैं। यह मदद के लिए भी रोना हो सकता है। संसार के त्रास की ध्वनि सुन लेनेवाले प्रत्येक की सहायता के लिए आ सकते हैं, क्योंकि बोधिसत्त्व लोगों की इच्छा को पहचान लेने की क्षमता से पूर्ण सम्पन्न हैं। हमें भी, इस क्षमता को विकसित करना चाहिए।

From Kaisozuikan 9 (Kosei Publishing Co.),
pp. 128-129

Living the Lotus
Vol. 157 (October 2018)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Eriko Kanao
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly by Rissho Kosei-kai International, Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य सस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

"लिविंग द लोटस्: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ" का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

President's Message

दूसरों के साथ मिलकर प्रसन्नचित्त से प्रयास करें

निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट, रिश्शो कोसेइ काइ

शरद ऋतु में अपनी पत्तियाँ बिखेरनेवाले वाले वृक्ष की तरह

जैसाकि चेरी का पेड़ भी,अपनी
सारी पत्तियाँ झाड़कर बिखेर देता है
जब वे लाल हो जाती हैं।

इस तरह कवि योसा बुसोन (1716-84) ने वर्ष के इस सुवास का वर्णन किया है, जब मौसम शरद ऋतु में बदल जाता है। बुसोन की कविता में, चेरी के पेड़ की पत्तियों के रंग बदलने और पेड़ की अन्य किस्मों की तुलना में पहले गिरने का विवरण बसंत के शानदार चेरी फूलों के बिखरने पर अध्यारोपित है, और यह आकर्षित करता है कि कैसे चेरी का पेड़ ईमानदारी से निर्धारित जीवन को पूरा करता है।

संयोग से, जब हम किसी भी चीज पर कड़ी मेहनत करते हैं या स्वयं को किसी काम में लगा देते हैं, तो हम इस तरह के वाक्यांशों "इस पर काम कर रहा हूँ" या "प्रयास कर रहा हूँ" का उपयोग करते हैं।शायद यही कारण है कि जब हम ऐसे वाक्यांश, "अकेले ही पूरे मन से लगा हूँ" या "प्रयास कर रहा हूँ," सुनते हैं, हमें लगता है कि उन्हें ऐसी चीज का वर्णन करना चाहिए जो हड्डी तोड़ या दर्दनाक है। धर्म के पालन में भी कुछ ऐसे लोग हैं, जो स्वयं के अलावे, अभिभूत महसूस करते हैं, जब वे ऐसे लोगों के सम्पर्क में आते हैं, जो कहते हैं, "प्रयास करो, प्रयास करो। मैं तब तक प्रयास करता रहूँगा, जब तक मैं मर नहीं जाता हूँ, और यदि मेरा पुनर्जन्म हुआ, तो मैं फिर प्रयास करूँगा।"

हालाँकि, मुझे लगता है कि एक प्रयास करने का अंतर्भूत अर्थ यह नहीं है कि आप को अत्यधिक परिश्रम करना चाहिए या पीड़ा को सहन करते हुए कठिन परिश्रम करते रहना चाहिए।

"प्रयास" के लिए जापानी शब्द "शोजिन", दो चीनी कैरेक्टर से बना है, जिनमें पहला, "शो" का मूल अर्थ चावल के बाहरी परतों को पॉलिश कर हटाने की क्रिया है। इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि प्रयास इंगित करता है कि यह जीवन का एक शुद्ध और अमिश्रित, अर्थात् प्रामाणिक और सीधा तरीका है। इसके अलावा, यह चीनी कैरेक्टर शो, "सार" या "मौलिक ऊर्जा" का भाव भी देता है, इसलिए वाक्यांश "चलो, अपना सबसे बेहतर प्रयास करते हैं," जिसे हम अक्सर एक दूसरे से कहते हैं, उसे, "चलें! अपनी शुद्ध एवं मूल शक्ति को विकसित करने का सीधा प्रयास करें" के अर्थ में समझा जा सकता है।

इस तरह से सोचते हुए, प्रकृति के कार्य, जैसे कि चेरी के पेड़ की पत्तियों का लाल होना और झड़ जाना, जैसाकि प्रारंभ में उद्धृत कविता में वर्णित हैं, क्या सभी उदाहरणें हमें दिखाते हैं कि प्रयास का क्या अर्थ है। इसके अतिरिक्त, जैसा कि हम भी प्रकृति के निरंतर रचनात्मक, सदा बदलते प्रयास का हिस्सा हैं, हम कह सकते हैं कि हमारे अपने प्रयास का अर्थ भी "प्रकृति के नियमों के अनुसार जीने" का प्रयास है। यह सम्यक प्रयास है, जो अष्टांगिक का स्वयं एक अंग है।

अपने मूल आत्म का सामना

हालाँकि, पेड़ के विपरीत, हम मानव प्राणि कभी-कभी अपने स्वकेन्द्रित अहंभाव को दिखाते हैं। पसंद या नापसंद, अच्छे या बुरे को मापने की हमारी अपनी छड़ें हैं, इसलिए हम अपनी आँखों के सामने होने वाली घटना को कभी-कभी ईमानदारी से स्वीकार करने में असमर्थ हो जाते हैं। उस समय आपका मन सच्चाई का पालन करे, ऐसे तरीके को खोजना "प्रयास करने" के बराबर है। इस तरह की पटुता, दूसरे शब्दों में, परिस्थिति के अनुकूल उचित प्रयास करने का तरीका, शाक्यमुनि ने समझाया है और इसका प्रदर्शन विभिन्न अभिव्यक्तियों में किया है।

उदाहरण के लिए गाथा की कुछ पंक्तियाँ हैं जो सुतनिपात और अन्य ग्रंथों में है::

विश्वास वह बीज है, जिसे मैं बोता हूँ,
अनुशासन बारिश है, ज्ञान मेरा हल है
विनम्रता धुरा है, आत्मा रस्सी है
जिससे वे बंधे हैं।
स्वनिरीक्षण जुताई में हल के ब्लेड एवं डण्ड हैं।
मैं कर्म एवं वचन को नियंत्रण में रखता हूँ,
मैं भोजन में मिताचारी, अत्याहार से दूर हूँ
मैं सत्य के संरक्षण द्वारा निरायी करता हूँ
सौम्यता बैलों के जुआ से मुक्त कराता है।

विनम्रता, आत्मनिरीक्षण, कर्म और वचन को नियंत्रण में रखने, आवश्यकता से अधिक लेने से दूर रहने, सत्य का संरक्षण करने और विनम्रता के माध्यम से आप अपने स्वकेन्द्रित अहंभाव पर चिन्तन करते हैं, जो स्वयं ही कभी-कभी दिखता है। आत्मचिन्तन करते और पश्चाताप करते समय, आप अपने मूल आत्म पर वापस आते हैं। हालाँकि, इनमें से कोई भी अत्यधिक उत्साही उपक्रम बनने वाला नहीं माना जाता है। इसके बजाय, उन चीज़ों का अभ्यास करने का प्रयास क्यों नहीं करते हैं, जो आपके आस-पास के लोगों के साथ-साथ आपको प्रसन्नचित्त करता हैं?

अपने वचनों के साथ थोड़ा और सावधान रहने से सद्भाव पैदा होता है, और दूसरों के साथ सौम्य होने से उनके मन को सुकून मिलता है। मिताहार से शरीर में हलकापन महसूस होता है, जैसाकि आप सबको अनुभव होगा।

मैंने एक बार देखा है, जैसे कि कविता की इन पंक्तियों से पता चलता है, रिश्शो कोसेइ-काइ के एक सदस्य का संकल्प, "मैं प्रत्येक दिन सम्यक व्यायाम के संकल्प से पूर्ण मन से व्यतीत करूँगा, "जो एक परिच्छेद के रूप में रिश्शो कोसेइ काइ की पत्रिका में प्रकाशित है, जिसमें लिखा है कि मैं वैसा काम करूँगा, जिसमें लोगों को आनन्द मिले.... मैं वैसा आदमी बनूँगा, जिसे हर कोई पसन्द कर सके....अपना आचरण ऐसा रखूँगा, ताकि मुझे अपने आप से शर्मिंदा नहीं होना पड़े....मैं लोगों के प्रति विनीत और दयालु रहूँगा....मैं ऐसा व्यक्ति बनूँगा, जो कभी क्रोध नहीं करेगा।" उन्होंने बुद्ध मार्ग पर चलने की खुशी के बारे में बात की, जबकि इन चीजों को बार-बार, और हर समय अपने आप से कहने को और समय समय पर आत्मनिरीक्षण करने को कहा। मुझे लगता है कि यह प्रयास के माध्यम से अपने मूल आत्म का सामना करने का आनंद है। फिर यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि आपका मूल आत्म बुद्ध प्रकृति के अलावा कुछ और नहीं है।

(कोसेइ, अक्टूबर 2018)

समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

त्रिविध पुण्डरीक सूत्र अध्याय –2 उपाय कौशल्य परिवर्त विषय प्रवेश

यह परिवर्त, परिवर्त 16 के साथ, "तथागत के शाश्वत जीवन" को पुण्डरीक सूत्र के हृदय के रूप में दीर्घ काल से माना जाता है। इस प्रश्न को ध्यान में रखना अच्छा होगा कि ऐसा क्यों है, लेकिन प्रथम हमें इस परिवर्त की योजना की जांच करने की आवश्यकता है।

प्रारंभ में शाक्यमुनि समाधि से निकले, जिसमें वे लंबे समय से निमग्न थे। किसी के भी प्रश्न पूछने से पूर्व, वे तत्क्षण शारिपुत्र को संबोधित करते हुए कहना प्रारंभ किया। वे बताते हैं कि बुद्धों का ज्ञान सबसे गहरा है, विश्व का मूल सत्य के प्रति जागरूकता है। यह मूल सत्य ऐसी गहराई है जिसे साधारण लोग समझ नहीं सकते हैं, और इस दृष्टि से, उनकी समझ की क्षमता के अनुकूल शिक्षा के विभिन्न तरीकों (उपाय कौशल्य) का उपयोग करके, उन्होंने अनेक लोगों को मुक्ति दिलायी है। लेकिन तथ्य यह है कि उन्होंने शिक्षा में निहित ठीक अर्थ को नहीं ग्रहण किया है।

दस तथतायें और एक हजार विचारों में अनुभव के तीन हजार विश्व

इतना कहकर बुद्ध अचानक मौन हो जाते हैं, पुनः प्रारंभ किया और शारिपुत्र को संबोधित कर कहा।

"यह पर्याप्त है, शारिपुत्र! यद्यपि, मैं इसकी विवेचना का प्रयास करुँ, तो भी इसे समझना आपके लिए संभव नहीं होगा। क्योंकि? बुद्ध को इस परमार्थ सत्य में प्रवीणता प्राप्त है। केवल बुद्ध के साथ एक बुद्ध ही इसकी गंभीरता को समझ सकते हैं।" सत्य का यह वर्णन, जो सत्ता के दस रूप में है, सबसे संक्षेप में है। हमारे लोक में सबकुछ का ऐसे रूप में उपस्थिति, ऐसी प्रकृति, ऐसी इकाई, ऐसी क्षमता, और ऐसा कारित्र है। जो एक पूर्व उत्पन्न परिस्थितियों के संपर्क में, असंख्य प्रभाव (तत्काल भौतिक परिणाम) और फल (निरंतर विपाक) उत्पन्न करता है।और इन परिवर्तनों का आधार एक सत्य है, जो कि एक वस्तु से दूसरी वस्तु में भिन्न लगता है, लेकिन आदि से अन्त एक सच्चाई में एक जैसा होता है।

दस सत्ताओं की शिक्षा का संग्रह जिसे *ryaku hokk*e (पुण्डरीक सूत्र के समग्र पारिभाषिक शब्दों का संक्षिप्त अर्थ संग्रह) कहते हैं, यह संक्षेप में "सभी चीजों का परमार्थ सत्य" के अर्थ का वर्णन करता है। जब इस धर्मदेशना को अपने जीवन में अपनाते है, इसकी व्याख्या निम्न प्रकार से होती है।

सबसे पहले, मानव के रूप में, हमारे सामने हमारी अपनी व्यक्तिगत इकाई हैं। दूसरे शब्दों में, हम में से प्रत्येक की अपनी उपस्थिति, प्रकृति और इकाई है। और, हमारे पास अपनी क्षमता और अपना कारित्र है जो हमारी उपस्थिति, प्रकृति और इकाई के लिए उपयुक्त है। हालांकि, वे कभी नियत नहीं हैं और नहीं अपरिवर्तनीय हैं। हम जैसा चाहें वैसा उनमें बदलाव ला सकते हैं।

हम आश्वस्त हैं कि हमारे व्यक्तिगत चरित्र को कभी नहीं बदला जा सकता है। हालांकि, यह सच नहीं है। जब तक हम किसी कारण को उपयुक्त परिस्थिति देते हैं, उचित प्रभाव और फल बाहर आ जाता है। इसलिए, व्यक्तिगत चरित्र रूपन्तरणीय है। यही दस सिद्धांतों का सिद्धांत हमें सिखाता है। इसलिए, बुद्धत्व की स्थिति तक पहुँचने की संभावना सभी मनुष्यों के मन में रहती है उस समय, हालांकि, नर्क में गिरने की संभावना भी निहित है। थिएनथाइ सम्प्रदाय के प्रधान भिक्षु (चि-यि)। ने सत्य का विश्लेषण किया और इसे एक विचार में तीन हजार लोकों के अनुभव के सिद्धांन्त के रूप में व्याख्या की। इसका अर्थ है कि अगर हम अपना मानसिक दृष्टिकोण बदलते हैं, तो तीन सहस्र लोक (सभी कल्पनाशील लोक) तदनुसार बदल जायेंगे। इसलिए, यदि हम एक ही विचार में दस तरह की अनुभवों और तीन सहस्र अनुभवों की शिक्षा को समझते हैं, तो हम इस विचार से दूर जा सकते हैं कि हम

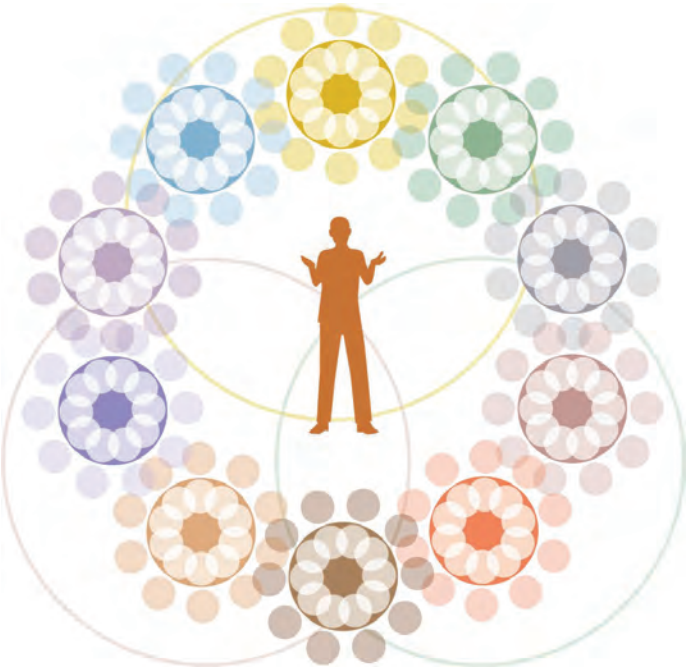

अपने चरित्र को बदलने के बारे में कुछ नहीं कर सकते हैं। इसके बजाए, हम स्वीकार करते हैं कि यह सच नहीं है, हम इसमें कोई भी बदलाव कर सकते हैं, और यह भी बुद्ध बनना संभव है। जिस कारण से हम अत्यन्त आभारी हैं, वह यही है। हमारा जीवन एकाएक पूर्ण रूप से उज्ज्वल भविष्य में बदल जाता है, जो हमें जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने की ओर प्रवृत करेगा।इस कारण से दस सत्ताओं की देशना को *ryaku hokke* कहते हैं और जो प्राचीन काल से आदरणीय बना है।

यद्यपि, उस समय शाक्यमुनि ने दस तथताओं की एकाएक विवेचना की, कोई भी अपने जीवन में इसे अपनाने का नहीं सोच सकता था। श्रोतागण इस नयी मोड़ से उलझन में थे और नहीं समझ पाये कि क्या कहें।

इसके अलावा, शाक्यमुनि ने कुशल साधनों के (उपाय कौशल्य) मूल्य पर जोर दिया और कहा कि कुशल साधनों (उपाय कौशल्य) की शिक्षा (प्रत्येक अवसर के लिए और प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचने के लिए उपयुक्त शिक्षा है), बुद्ध के ज्ञान से निकला है, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं है।

फिर भी, श्रोतागण और अधिक उलझन में हैं। बुद्ध को जिस परमार्थ सत्य का बोध हुआ है, उसकी व्याख्या करते हुए, उन्हें उपायकौषल्य की हर रोज़ की शिक्षा को प्रशंसा के शब्दों के साथ मानना है, और वे किसी अन्य प्रभाव को देखने में असमर्थ हैं।

तीन बार अनुरोध और तीनों बार अस्वीकृत

शारिपुत्र के नकाराने के बाद भी उनका अनुरोध जारी रहा। बुद्ध ने तीन बार व्याख्या करने के अनुरोध को इस आधार पर अस्वीकार किया कि व्याख्या से केवल भ्रमित हो सकते हैं और अनकहा छोड़ देना बेहतर है।

चूँकि, आरंभ करने के लिए, बुद्ध के स्वयं की अनुकूलता का आकलन था, किसी बाहरी संकेत या किसी प्रश्न के आने की प्रतीक्षा की आवश्यकता नहीं थी। हमें यह समझना चाहिए कि उनकी इस प्रदर्शन में अनिच्छुक रहने के पीछे का उद्देश्य सुनने वालों को आने वाली व्याख्या को ध्यान से सुनने के लिए एक समुचित मनोदशा में लाना था। फिर शारिपुत्र के विनम्र अनुरोध में, उनके सुनने वाले तैयार हैं, बुद्ध बोलने को उद्यत्त थे।

पाँच सहस्र का बहिर्गगनन

जैसे ही शाक्यमुनि ने चर्चा प्रारंभ किया, महासमाग से पाँच सहस्र एक साथ उठ खड़े हुए और बाहर चले गए।शाक्यमुनि देखते रहे, उन्हें रोकने का कोई प्रयास नहीं किया। जब सब छोड़कर चले गये, उन्होंने अपनी व्याख्या पुनः प्रारंभ की।

बुद्धों का लोक में आविर्भाव का महान कारणः प्रकाश में लाना-, प्रदर्शन करना, अनुभव कराना, और पालन कराना

निम्नलिखित उनके सम्पूर्ण व्याख्या के सबसे मूलभूत भाग का एक उद्धरण है।

"बुद्धों का लोक में आविर्भाव केवल एक महान कारण से होता है। बुद्ध जीवित प्राणियों को बुद्धज्ञान और अंतर्दृष्टि पाने के लिए उनकी आँखें खोलने की इच्छा रखते हैं जिससे कि वे सभी चीजों की परम वास्तविकता को समझ सकें और शुद्ध हो जाएँ। वे जीवित प्राणियों के लिए बुद्ध के असीम ज्ञान और अंतर्दृष्टि का प्रदर्शन करना चाहते हैं।

वे जीवित प्राणियों को अपने अनुभव के माध्यम से बुद्ध के ज्ञान और अंतर्दृष्टि का एहसास करने की इच्छा रखते हैं। वे जीवित प्राणियों को बुद्ध ज्ञान और अंतर्दृष्टि के मार्ग में प्रवेश में सक्षम बनाना चाहते हैं। यह एक महाकारण है जो बुद्धों के लोक में आविर्भाव का कारण बनता है।"

इस प्रकार, यहाँ, शाक्यमुनि ने प्रथम बार लोक में बुद्धों के आविर्भाव का एक महान कारण स्पष्ट किया है।

तीन यानों का स्पष्टीकरण और एक यान की उद्घोषणा करने की घोषणा

तदुपरान्त, शाक्यमुनि ने तीन यानों (श्रावक यान, प्रत्येकबुद्ध यान, तथा बोधिसत्त्व यान) की घोषणा और एक बुद्ध यान की उद्घोषणा की। बुद्ध तथागत ने जिनको प्रशिक्षित किया और जिनको परिवर्तित किया, वे सभी बोधिसत्त्व हैं। बुद्ध ने विविध उपाय कौशल्य के माध्यम से उनको मात्र इस ध्येय से शिक्षा दी है, ताकि जीवित प्राणियों को बुद्ध की अन्तर्दृष्टि का भान हो सके और उनको इसका बोध हो सके। बुद्धों ने धर्म की व्याख्या केवल इसलिए की है, क्योंकि उनकी कामना है कि जीवित प्राणी बुद्ध की अन्तर्दृष्टि के मार्ग में आरुढ़ होने में समान रूप से समर्थ बन जाय। केवल एक सत्य है, धर्म का दो या तीन में विभाजन नहीं है।

मैंने पूर्व में कभी नहीं कहा कि तुम सब बुद्ध बनोगे क्योंकि उचित समय नहीं आया था। अब निश्चय ही यह महायान का उपदेश करने का उचित समय है, जो सर्वोतम देशना है। मैंने उपाय कौशल्य के माध्यम से विविध धर्मदेशनाओं (नवांग धर्मदेशनाओः श्रावक यान की धर्मदेशनाओं) का उपदेश किया है जो लोगों की ग्राह्य क्षमता के समानुकूल हैं। वे लोगों के महायान में प्रवेश मार्ग को प्रशस्त करते हैं। अब मैं अनेक लोगों को पहचानता हूँ जिनका मन शुद्ध एवं लचीला है, और जो सम्यक ढंग से बुद्ध धर्मदेशना का पालन करते हैं। उनके हेतु मैंने इस महायान सूत्र का उपदेश किया हैं।

इस तरह की चीजें जैसे, कोई पैगोडा के सामने खड़ा होकर कुछ क्षण प्रार्थना करता है,या कोई बच्चा छड़ी से जमीन में बुद्ध का चित्र खींचता है, इस पर उसका प्रभाव नहीं है, परन्तु ये चीजें वास्तव में सर्वोच्च मार्ग, बुद्ध मार्ग से जुड़ा है। कोई भी उपायकौशल्य के संभावित दायरे को कम कर आंकने की भूल नहीं करे। हम स्मृति में रखें कि उपायकौशल्य स्वयं में सत्य है।

विषय को विस्तार में विकसित किया गया है, लेकिन उपसंहार में शाक्यमुनि ने कहा कि जो कोई मन की सादगी एवं शुद्धता से नवांग धर्मदेशना पर ध्यान केन्द्रित करता है और जिनकी विवेचना उसने परमार्थ सत्य के अनुसार की है, वह बोधिसत्त्व है और बुद्ध बनने के मार्ग पर आरुढ़ है।वे सभी जो इस सत्य को समझते हैं और हृदय से आनन्दित हैं, बुद्ध बनेंगे।

निक्क्यो निवानो "सद्धर्म तृपाठको सबै अंशको सरांस र मुल अर्थ"
(नयाँ प्रकाशण) कोसेइ प्रकाशण २०१६, पेज २९-३२

अपने स्व मूल की गवेषणा में अध्यवसायी बनें

जब हम अक्टूबर की बातें करते हैं, तो मन में कुछ बातें सामने आती हैं जैसेकि "पतझड़ खेल के लिए सबसे अच्छा मौसम है," "पतझड़ पढ़ने के लिए सबसे अच्छा मौसम है," साथ ही सकरकन्द को खोदकर निकालने, अंगूर तोड़ने और हेलोवीन सहित विभिन्न कार्यक्रम। रिश्शो कोसेइ काइ के कई सदस्यों के लिए, पहली चीजें जो दिमाग में आती हैं, वे ओएशिकी-इचिजो महोत्सव, और वार्षिक सेइतान्वी मात्सुरी (संस्थापक का जन्मस्थान महोत्सव) हो सकते हैं। यहाँ मैं इस वर्ष के लिए एक नया कार्यक्रम भी जोड़ना चाहता हूँ--संयुक्त राज्य अमेरिका में सैन एंटोनियो धर्मकेन्द्र की नई इमारत का पूरा होने का समारोह, और धर्मकेन्द्र की वेदी पर बुद्ध की प्रतिमा की स्थापना। यह हम सभी के लिए विशेष खुशी लाएगा।

हालाँकि, सबसे महत्वपूर्ण बात जो मन में आती है, वह संस्थापक निवानो के परिनिर्वाण में प्रवेश का वार्षिक समारोह है। 10 अक्टूबर, 1999 को संस्थापक निवानो की अंतिम संस्कार सेवा के लिए उनके अंतिम संस्कार में, प्रेसिडेण्ट निवानो ने उल्लेख किया था कि संस्थापक बुद्ध के समान कामना करते थे, और बुद्ध के समान अपना जीवन यापन किया था। ऐसा ही भाव रिश्शो कोसेइ काइ की नींव की में व्यक्त किया गया है, जो इस प्रकार है, "मैं कामना करता हूँ कि अनगिन्नत लोग पुण्डरीक सूत्र में दिखाए गए मनुष्यों के जीवन यापन के तरीके को, जहाँ तक संभव है, जाने और सच्ची खुशी को अपना बना लें।"

इस महीने, जबकि हम स्व मूल (बुद्ध स्वभाव) की सहर्ष कर्मनिष्ठ होकर पुनर्गवेषणा में अपने को लगा रहे हैं, हम संस्थापक निवानो की कामना को अपना बनाना चाहते हैं।

रेवरेन्ट कोईची साइतो
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल

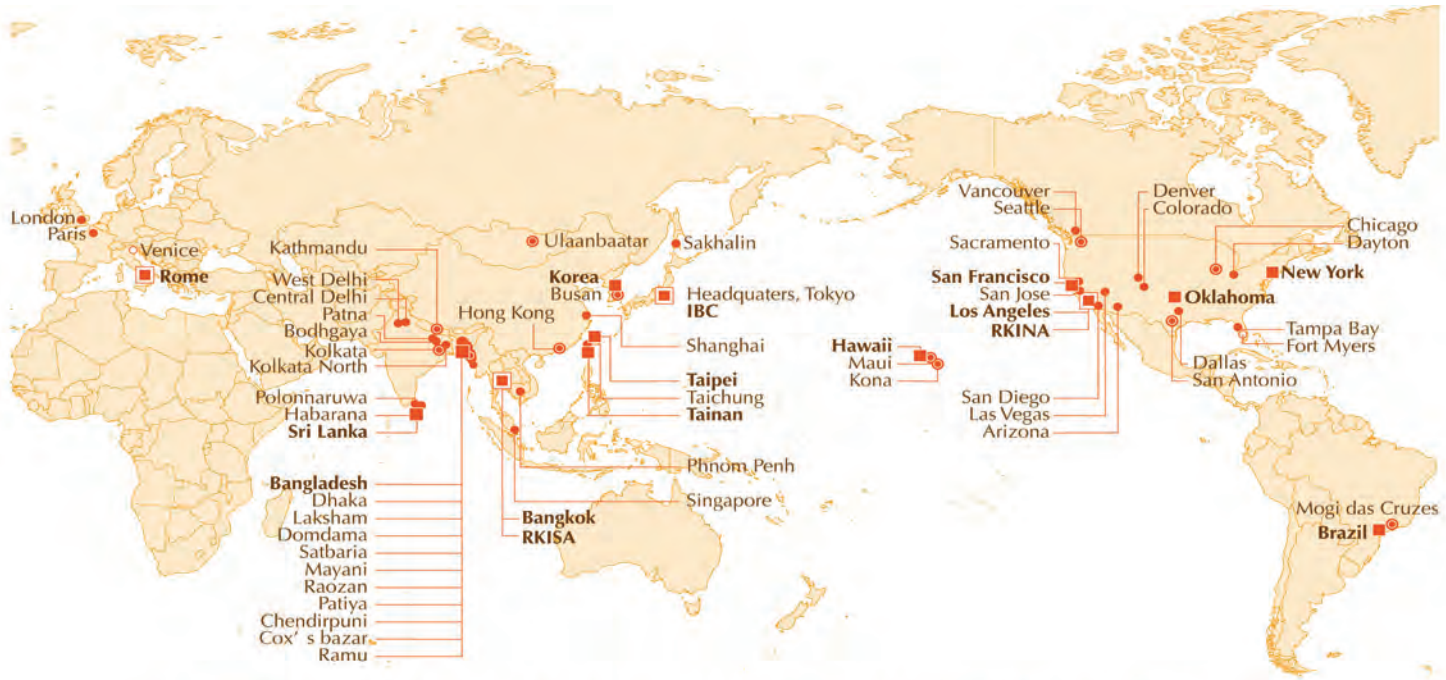

RISSHO KOSEI-KAI INTERNATIONAL BRANCHES

Welcome comments on our newsletter Living the Lotus: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai
Overseas Dharma Centers 2018

Rissho Kosei-kai International
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 *Fax:* 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)
2707 East First Street Suite #1 Los Angeles CA 90033 U.S.A
Tel: 1-323-262-4430 *Fax:* 1-323-262-4437
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center
28621 Pacific Highway South, Federal Way,
WA 98003 U.S.A.
Tel: 1-253-945-0024 *Fax:* 1-253-945-0261
e-mail: rkseattlewashington@gmail.com
http://buddhistlearningcenter.org/

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio
6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
P.O. Box 692148, San Antonio, TX78269, USA
Tel: 1-210-561-7991 *Fax:* 1-210-696-7745
e-mail: dharmasanantonio@gmail.com
http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay
2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.
Tel: (727) 560-2927 *e-mail*: rktampabay@yahoo.com
http://www.buddhismtampabay.org/

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii
2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
Tel: 1-808-455-3212 *Fax:* 1-808-455-4633
e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center
1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
Tel: 1-808-242-6175 *Fax:* 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center
73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona,
HI 96740 U.S.A.
Tel: 1-808-325-0015 *Fax:* 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles
2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
Tel: 1-323-269-4741 *Fax:* 1-323-269-4567
e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco
1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
Tel: 1-650-359-6951
e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

Rissho Kosei-kai of Sacramento
Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York
320 East 39th Street, New York, NY 10016 U.S.A.
Tel: 1-212-867-5677 *Fax:* 1-212-697-6499
e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

Rissho Kosei-kai of Chicago
1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056 U.S.A.
Tel : 1-773-842-5654 *e-mail:* murakami4838@aol.com
http://home.earthlink.net/~rkchi/

Rissho Kosei-kai of Fort Myers
http://www.rkftmyersbuddhism.org/

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma
2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112 U.S.A.
Tel & Fax: 1-405-943-5030
e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver
1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204 U.S.A.
Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton
425 Patterson Road, Dayton, OH 45419 U.S.A.
http://www.rkina-dayton.com/

Risho Kossei-kai do Brasil
Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
CEP 04116-060 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377
Fax: 55-11-5549-4304
e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

Risho Kossei-kai de Mogi das Cruzes
Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
CEP 08730-000 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei
4F, No. 10 Hengyang Road, Jhongjheng District,
Taipei City 100 Taiwan
Tel: 886-2-2381-1632 *Fax:* 886-2-2331-3433
http://kosei-kai.blogspot.com/

Rissho Kosei-kai of Tainan
No. 45, Chongming 23rd Street, East District,
Tainan City 701 Taiwan
Tel: 886-6-289-1478 *Fax:* 886-6-289-1488

Korean Rissho Kosei-kai
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
Tel: 82-2-796-5571 *Fax:* 82-2-796-1696
e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
Tel: 82-51-643-5571 *Fax:* 82-51-643-5572

Branches under the Headquarters

Rissho Kosei-kai of Hong Kong
Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong, Republic of China

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar
15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
Tel: 976-70006960 *e-mail:* rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin
4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai di Roma
Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax : 39-06-48913949 *e-mail:* roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK
Rissho Kosei-kai of Venezia
Rissho Kosei-kai of Paris

International Buddhist Congregation (IBC)
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 *Fax:* 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp http://www.ibc-rk.org/

Rissho Kosei-kai of South Asia Division
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax*: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax*: 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Branches under the South Asia Division

Rissho Kosei-kai of Delhi
77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar, New Delhi
110060, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata
E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North
AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya
Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu
Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,
Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh
#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Rissho Kosei-kai of Patna
Rissho Kosei-kai of Singapore

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218 *e-mail:* info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh
85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka
House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani
Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station: Mirshari,
District: Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya
Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama
Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar
Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria
Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham
Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan
West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni
Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu

Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka
No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
Tel: 94-11-2982406 *Fax*: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Habarana
151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Other Groups

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai